



असंभव ने बिल पेश कर दिया

FERDINANDO FREGA · GILLETTENARRATIVE · GILLETTEVATICANO

प्राक्कथन

मुझे याद है, बचपन में पिता हमें रविवार के भोजन पर ले जाते थे। हमेशा उसी रेस्तराँ में: साला बेल्ला। मालकिन एक भारी-भरकम स्त्री थी, हमेशा मुस्कुराती, हमेशा स्वागत करती। खाना अच्छा था। स्वादिष्ट। अनोखा।

अक्सर उनके अफ़सर भी हमारे साथ बैठ जाते। मूल रूप से फ़्रियूली के, कद लगभग दो मीटर, वज़न एक सौ बीस किलो से कहीं ज़्यादा, और भूख भरपूर। वे अपने परिवार के साथ मेस्सीना से कार चलाकर आते थे।

भोजन के अंत में बिल आता। पिता उसे चुकाने के लिए कभी अपनी कुर्सी से नहीं उठे। वे बस नोट मोड़कर रुमाल में रख देते, जो खाली प्लेट पर पड़ा होता।

मैंने उन्हें कभी बिल बाँटते नहीं देखा। कभी कोई दूसरा इंतज़ाम नहीं देखा। कभी इस पर कोई बहस नहीं सुनी।

वे अफ़सर थे। मेरे पिता विक्रेता थे।

और चुकाता विक्रेता है।

फिर एक शाम, जब हम गाड़ी गैरेज में लगा रहे थे, उन्होंने मुझसे कहा:

“तुम मुझे हमेशा चुकाते देखते हो। हमेशा सबसे पहले पैसे की ओर हाथ बढ़ाते देखते हो। इसलिए तुम्हें लगता है कि बिल मैं चुका रहा हूँ। मैं नहीं चुका रहा।”

मैं समझा नहीं।

मुझे एक महीना लगा।

एक रविवार, उसी मेज़ पर, अफ़सर ने भीतरी जेब से एक नोटबुक निकाली और पिता के बोलते-बोलते लिखना शुरू कर दिया।

किसने नई दुकान खोली। किसने बंद की। कौन चालान चुकाने में देर कर रहा है। किसके बेटे ने पारिवारिक कारोबार सँभाल लिया। कौन अब भी प्रतिद्वंद्वी का माल शो-विंडो में सजाए हुए है।

मुझ पर किसी ने ध्यान नहीं दिया, क्योंकि मैं बच्चा था, और मेज़ पर बच्चे गिनती में नहीं आते।

सोमवार सुबह वे नोट अफ़सर के हस्ताक्षर के साथ मिलान चले जाते।

मेरे पिता रात के खाने का बिल चुकाते। अफ़सर बाकी सब कुछ चुकाते।

बीस साल, एक भी चेतावनी नहीं। एक भी अनुशासनात्मक टिप्पणी नहीं। और सबसे बढ़कर, एक भी अस्वीकृत वेतनवृद्धि नहीं।

मेरे पिता जिलेट इटली के तीन सबसे अधिक वेतन पाने वालों में गिने जा सकते थे, प्रबंध निदेशक और बिक्री निदेशक के ठीक बाद। इसलिए नहीं कि वे सबसे ज़्यादा बेचते थे। इसलिए कि उस अतिरिक्त मूल्य का स्वामी और कोई नहीं था — उन कहानियों का, जो हर दिन ग्राहकों के सामने खुलती थीं।

बिल हमेशा वही चुकाता है जो मेज़ पर बैठा नहीं होता।

यह वाक्य याद रखिए। अंत में इसकी ज़रूरत पड़ेगी।

भाग एक

यह इतनी लंबी भूमिका क्यों?

यह समझाने के लिए कि आज क्या हुआ। और वह भी, जो मैंने इस आशा में लिखा कि किसी दिन यह सचमुच घटे। निकट भविष्य में या बहुत बाद में, मुझे नहीं पता।

अगस्त के मध्य की रविवार दोपहर थी। झुलसा देने वाली गर्मी। सूखी हवा। वही तापमान, जो इसीलिए और तपता लगता है क्योंकि नमी नाममात्र की होती है।

एयर कंडीशनर पूरी ताकत से चल रहा था और मेरी पत्नी, हमेशा की तरह, उसे बंद करने की याद दिला रही थी, क्योंकि बिजली के बिल यों ही काफ़ी नमकीन हैं, उनमें और नमक डालने की ज़रूरत नहीं।

शाम के साढ़े छह बजे के आसपास था। मैं अपनी लाल आरामकुर्सी पर पसरा हुआ था कि मोबाइल बजा।

कोड था +1। संयुक्त राज्य अमेरिका। भला इस वक़्त अमेरिका से मुझे कौन फ़ोन करेगा, जबकि वहाँ अभी दोपहर के भोजन का समय होना चाहिए?

मैंने फ़ोन उठाया।

“हैलो?”

“हैलो?”

एक शांत आवाज़। गहरी। हल्की-सी कंठ से आती हुई।

“मैं फ़ेर्दिनांदो से बात करना चाहता हूँ।”

“बोल रहा हूँ। मैं किससे बात कर रहा हूँ?”

“मैं रॉबर्ट हूँ। शुभ संध्या। फ़्रांसीसी उपनाम वाला अमेरिकी।”

मैं हँस पड़ा।

“फ़ोन के लिए धन्यवाद, पर सच कहूँ तो जिसने भी यह मज़ाक रचा है, उसे दाद देनी होगी। मैं पूरी तरह फँस गया। हालाँकि, अब सोचता हूँ तो — आप रोम में बैठे-बैठे अमेरिकी नंबर से फ़ोन कर रहे हैं?”

“हाँ। यह मेरा निजी मोबाइल है। मैंने कोई आधिकारिक माध्यम इस्तेमाल नहीं किया, क्योंकि यह संस्थागत संवाद नहीं है। यह उन गिने-चुने विशेषाधिकारों में से एक है जो अब भी मुझे प्राप्त हैं। संदेह हो तो मैं आपको वैटिकन का एक्सचेंज नंबर दे देता हूँ, आप जाँच लीजिए।”

“नहीं। ठीक है। कृपया कहिए।”

मैं संशय में था। सतर्क। सावधान। पर फ़ोन काटना नहीं चाहता था। रूखापन कभी मेरा स्वभाव नहीं रहा। इसके बजाय मैंने अपनी भीतरी ख़तरा-पहचान प्रणाली अधिकतम पर कर दी और समझने की कोशिश की कि मैं आखिर कहाँ आ गिरा हूँ।

“कहिए, परमपावन। आज मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?”

“हम नाम से बात कर सकते हैं, नांदो। उम्र में हम इतने दूर नहीं हैं।”

“सच है। हम केवल भूमिकाओं में दूर हैं। आप कैथोलिक चर्च के नंबर दो हैं। मैं लिपिकों में अंतिम हूँ।”

“नंबर दो क्यों? मेरी धारणा तो यह थी कि मैं नंबर एक हूँ।”

“असहज लगे तो क्षमा कीजिए। नंबर एक वह हैं जिन्होंने यह सब खड़ा किया: ईसा। जिलेट में मेरे पुराने सहकर्मी। एकमात्र व्यक्ति जिन्हें ठीक-ठीक पता था कि वे क्या कर रहे हैं। चूँकि वे अपने मुख्य कार्यकारियों की सार्वजनिक नियुक्ति नहीं कर सकते थे, उन्होंने पोप का पद गढ़ा और उसे अपने ढंग से भरने की स्वतंत्रता आपको दे दी।”

वे ठहाका मारकर हँस पड़े।

“अब समझा,” उन्होंने कहा, “कि मेरे घर के हर गलियारे में यही सवाल क्यों गूँजता है: आज गिलेटनैरेटिव देखा? उस सहकर्मी ने अब क्या लिख डाला?”

उनकी रफ़्तार के साथ चलने में मुझे कोई कठिनाई नहीं हुई। अच्छा विक्रेता खेल को शुरू होते ही पहचान लेता है। पर वे भी इतने बुद्धिमान थे कि उसे पहचान लें, और उन्होंने तुरंत अपने को ढाल लिया।

“आप जानते हैं कि मैं उसी नंबर से बोल रहा हूँ जो मेरे अमेरिकी बैंक खाते से जुड़ा है? कुछ समय पहले मैंने उसी बैंक को सीधे फ़ोन किया था और उन्होंने काट दिया, क्योंकि उन्हें लगा यह कोई मज़ाक है।”

“जी, परमपावन।”

“नहीं, नांदो। कृपया। मुझे रॉबर्ट कहिए। कम से कम निजी बातचीत में। शिष्टाचार के बिना। जीवन आसान हो जाता है।”

“तो फिर, रॉबर्ट, आपने गलत बैंक चुना। आपके पद पर तो उन्हें आपके पास आना चाहिए। बल्कि वैटिकन सिटी के भीतर शाखा खोलना लगभग अनिवार्य माना जाना चाहिए। अकेली प्रतिष्ठा ही इसे उचित ठहरा देती। ऐसा अवसर, जिस पर कोई गंभीर बैंकर बहस करने की हिम्मत तक न करे।”

“आप सही हैं। पर अर्थशास्त्र मेरा क्षेत्र नहीं। और यह फ़ोन टोह लेने के लिए है। ठीक वैसे ही जैसे वह पत्र जो आपने मुझे भेजा। अंततः हम एक ही काम करते हैं।”

“वह क्या?”

“हम दोनों अपने साथी मनुष्यों को समझने की कोशिश कर रहे हैं।”

भाग दो

“जानते हैं, नांदो, आपने अपने गिलेटवैटिकन पर जो भी कहानियाँ लिखी हैं, मैंने सब पढ़ी हैं। मेरा पहला सवाल यह है।”

बाईस भाषाएँ क्यों? बाईस दुनियाएँ? वहाँ भी, जहाँ चर्च व्यावहारिक रूप से हाशिये पर है। भारत को ही लीजिए।

“क्योंकि बाज़ार का एक नियम है जिसे आपने कभी सचमुच लागू नहीं किया।

उपभोक्ता ग्राहक नहीं होते। ग्राहक वह है जो पहले से आपसे ख़रीदता है। उपभोक्ता वह है जो अब भी ख़रीद सकता है।

आप ग्राहक गिनते हैं। बपतिस्मा पाए हुए। नियमित उपासक। पंजीकृत विश्वासी। और बाकी सबको भूल जाते हैं।

बाज़ार वहाँ नहीं जीते जाते जहाँ आप पहले से मज़बूत हैं। बाज़ार वहाँ जीते जाते हैं जहाँ आप अनुपस्थित हैं और कोई आपके आने की अपेक्षा नहीं करता।

बाईस भाषाएँ बाईस अनुवाद नहीं हैं। वे बाईस खुले दरवाज़े हैं।”

“एक क्षण ठहरिए। क्या आप कह रहे हैं कि आस्था एक उत्पाद है, और लोग धर्म वैसे ही बदलते हैं जैसे टूथपेस्ट का ब्रांड?”

“मैं कह रहा हूँ कि लोग हिलते हैं। और यदि यह कथन आपको चुभता है, तो देखिए पिछले तीस वर्षों में लातिन अमेरिका भर में आपके धर्मप्रांतों के साथ क्या हुआ, और बताइए कि उन्हें किसने हिलाया।

इसका अर्थ यह है कि आपको एक भी आँकड़ा देने से पहले मैं गंभीर जाँच-पड़ताल का अधिकार सुरक्षित रखता हूँ। जिन प्रतिफलों को मैंने परखा नहीं, उनका वादा नहीं करता। वह सलाहकार करते हैं। और सलाहकार बिल तो भेज ही देते हैं।

अभी इसी क्षण जो मैं कह सकता हूँ, वह यह है। आपका विपणन — क्योंकि हाँ, आप विपणन करते हैं, और बुरी तरह करते हैं — बीस साल पहले पुराना पड़ चुका। अब कोई अभियानों से अनुयायी नहीं जुटाता। किसी भी उद्योग में नहीं।

एक ही चीज़ काम करती है। वह भाव-भंगिमा बन जाना, जिसे व्यक्ति करने का निर्णय लेने से पहले ही कर रहा होता है।

तो बस एक सवाल बचता है। और वह आपके लिए है।”

“कहिए।”

“आप इतिहास के पोप के रूप में याद किए जाना चाहते हैं? या उस पोप के रूप में जिसने इतिहास रचा?”

“दोनों मिलते-जुलते लगते हैं।”

“इनके बीच पूरी दुनिया का फ़र्क़ है। और उत्तर पूरी तरह आप पर निर्भर है।”

उपसंहार

“तो,” उन्होंने कहा, “आपके समय के लिए, आपकी उपलब्धता के लिए और सबसे बढ़कर आपकी रुचि के लिए धन्यवाद।

मुझे आपसे एक बात कहनी है। मैं आपसे केवल एक कथाकार की तरह बात नहीं कर रहा था। न समाजशास्त्री की तरह। न लेखक की तरह। न अर्थशास्त्री की तरह। मैं आपसे एक तंत्र-रणनीतिकार की तरह बात कर रहा था।

मैं निर्णय लेने और औपचारिक रूप से आपको अपनी राय बताने का अधिकार सुरक्षित रखता हूँ।”

फिर वे रुके।

“एक प्रश्न है जो मैं आपसे पूछना चाहूँगा, नांदो। यह सब कुछ। बाईस भाषाएँ। जाँच-पड़ताल। रेज़र के पैकेट में रखा पर्चा। इसका खर्च कौन उठाता है?”

और अचानक मैं 1975 के उस गैरेज में लौट आया, उस आदमी के पास खड़ा जो अभी-अभी वह भोजन चुका चुका था जिसे वह असल में नहीं चुका रहा था।

“रॉबर्ट। चुकाते हमेशा लोग हैं। हमेशा वही लोग। आप उसे भेंट कहते हैं। हम उसे खुदरा क्रीमत कहते थे। पर खुलने वाला हाथ वही एक है।

अंतर कभी यह नहीं होता कि चुकाता कौन है। अंतर यह होता है कि उस धन का कितना हिस्सा किसी उपयोगी चीज़ के रूप में लौटता है, और कितना अटका रह जाता है, उन लोगों को पालने में जिन्हें बहुत कम पैदा करने के लिए बहुत ज़्यादा दिया जाता है।

मेरे पिता भोजन का बिल चुकाते थे और कुछ भी नहीं चुकाते थे। क्योंकि जो वे दे देते थे, वह उससे अधिक मूल्यवान था जो वे खर्च करते थे।

अब यह तय करना आपका काम है कि आप मेज़ की किस ओर बैठे हैं।”

“क्या आप मुझसे कुछ पूछना चाहेंगे?” उन्होंने कहा।

“जी हाँ। अपना ध्यान रखिए। इस पर ध्यान दीजिए कि आप कहाँ हैं। यह दुनिया की सबसे सुंदर जगह है। सबसे सुरक्षित नहीं। ख़तरे भीतर से आते हैं। और वे ठीक तभी अदृश्य होते हैं जब आप उसे खोलने चलते हैं जिसे आपने अभी समझा नहीं है।

और एक बात और, परमपावन। धन्यवाद।”

येसु मसीह की स्तुति हो।

हम किताबें नहीं बेचते। हम रिश्ते बनाते हैं।

Ferdinando